देश-प्रेम की कहानियाँ

H
8.5 V 459 D
V 459D

सन्तराम वत्स्य

देश-प्रेम की कहानियाँ

सन्तराम वत्स्य

ज्ञान भारती
४/१४, रूपनगर, दिल्ली-११०००७

GyanBharati, Delhi

CATALOGUED

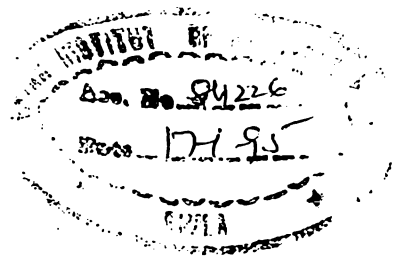

H
028.5
V459D

Library IIAS, Shimla
H 028.5 V 459 D
00084226

ज्ञान भारती
४/१४, रूपनगर
दिल्ली-११०००७
द्वारा प्रकाशित

● मू[redacted]

संस्करण
१९८६ 1986

चोपड़ा प्रिंटर्स
मोहन पार्क, नवीन शाहदरा,
दिल्ली-११००३२ में मुद्रित

[377.3-22-686/G]
DESH-PREM KI KAHANIYAN (Stories)
by Sant Ram Vatsya

Price : [redacted]

कथा-क्रम

१.	अपनी जीभ काट दी	५
२.	स्वतंत्र भारत की पहली लड़ाई	९
३.	बालक राजा की वीरता	१४
४.	एक बालचर का साहस	१७
५.	दर्जी से जल सेनापति	२५

अपनी जीभ काट दी

सन् १८९६ की बात है। एबिसीनिया और इटली में युद्ध छिड़ा हुआ था। बहादुर एबिसीनिया निवासियों ने इटली को अपने देश से मार भगाया था। पर अब भी छिट-पुट घटनाएं हो रही थीं। खिसियाए हुए इटली के सैनिक इक्के-दुक्के हमले बोल देते थे। पर प्रायः उन्हें मुंह की खानी पड़ती थी। एबिसीनिया वालों को अपनी स्वतंत्रता प्यारी थी और उसकी रक्षा के लिए वे बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार रहते थे।

एक दिन इटली की सैनिक टुकड़ी ने एबिसीनिया के एक गांव पर धावा बोल दिया। वहां एबिसीनिया के थोड़े से सैनिक थे। वे बड़ी वीरता से लड़े पर अचानक आक्रमण होने के कारण तथा आक्रमणकारियों की संख्या बहुत होने के कारण वे टिक नहीं सके। उनके पांव रणभूमि से उखड़ गये। वे चाहते थे कि कुछ समय के लिए युद्ध से बचा जाये। इसके दो कारण थे। एक तो यह कि उनकी सहायता को और सैनिक पहुंच जाएं और दूसरा यह कि मोर्चा ऐसी जगह लगाया जाए जहां से शत्रु को अधिक हानि पहुंचाई जा सके।

वे भाग खड़े हुए और पहाड़ी पर के एक संकरे मार्ग के पास जा ठहरे। इस पड़ाव के पास ही एक छोटा-सा गांव था। गांव के सभी युवक सेना में जा चुके थे। गांव से हटकर पहाड़ी रास्ते के पास एक अकेला घर था। यह घर

एक एबिसीनिया के सैनिक अधिकारी का था। घर के सब लोग सेना में भर्ती हो चुके थे। केवल एक लड़की घर में थी।

भागे हुए सैनिकों ने वहीं रात काटी और दूसरे दिन फिर पीछे को कूच किया। वे जानते थे कि इटली के सैनिक हमारा पीछा कर रहे हैं और वे इसी रास्ते आएंगे।

यह भोली-भाली लड़की कहीं उन्हें हमारे यहां ठहरने और जाने की बात न बता दे, इसलिए सेना का अधिकारी लड़की के पास गया। उसने लड़की को अच्छी तरह समझा दिया कि शत्रु सैनिकों को हमारे यहां ठहरने और हम किस ओर गये हैं, इस बारे में कुछ न बताए। अगर उसने बता दिया तो हम मारे जाएंगे और शत्रु गांव पर गांव लूटते फिरेंगे। इससे हमारे देश की बड़ी हानि होगी। बस, इतना कहकर वह वहां से चल दिया।

लड़की ने सारी बात ध्यान से सुनी थी और एक सैनिक अधिकारी के परिवार की लड़की होने के कारण वह जानती थी, कि उसका क्या कर्त्तव्य है। उसने मन ही मन निश्चय किया कि शत्रुओं को कुछ नहीं बताएगी।

दूसरे दिन पीछा करते इटली के सैनिक आ पहुंचे। उनका अनुमान था कि एबिसीनिया के भागे हुए सैनिक यहीं-कहीं ठहरे होंगे। अपने अनुमान को पक्का करने के लिए वे रास्ते के पास के लड़की के घर में घुस आए। उन्होंने इधर-उधर देखा पर एक लड़की के सिवा वहां कोई नहीं था। उन्होंने लड़की से पूछ-ताछ प्रारम्भ कर दी। जब लड़की ने कहा कि मुझे कुछ पता नहीं तो उन्होंने तरह-तरह के लालच दिखाए। उसने फिर भी कुछ नहीं बताया। तब वे उसे डराने-धमकाने लगे। बेचारी अकेली जरा-सी लड़की और इतने सारे सैनिक !

वह जानती थी कि ये मुझसे भेद जानने के लिए तरह-तरह के कष्ट देंगे। बेचारी कोमल कली जैसी लड़की, पर उसका हृदय जैसे वज्र का बना हुआ था। उसने सोचा, कहीं ऐसा न हो कि इनके सताने से मैं घबरा जाऊं और भेद बता दूं।

तो फिर क्या करना चाहिए ? उसे एक उपाय सूझ गया। बड़ा विचित्र उपाय था। बात यह है कि जहां चाह होती है वहां राह निकल ही आती है।

उसके मन में अपने देश का प्रेम था। वह अपने देश की हानि नहीं होने देना चाहती थी।

तो फिर उसने क्या किया?

उसने अपनी जेब से चाकू निकाला और झट से अपनी जीभ काट डाली और सामने फेंक दी।

अब कोई भी उससे कुछ नहीं कहलवा सकेगा। फिर चाहे उसे कितने ही कष्ट क्यों न दिये जाएं। लड़की निश्चिन्त खड़ी थी। उसने अपनी समस्या सुलझा ली थी।

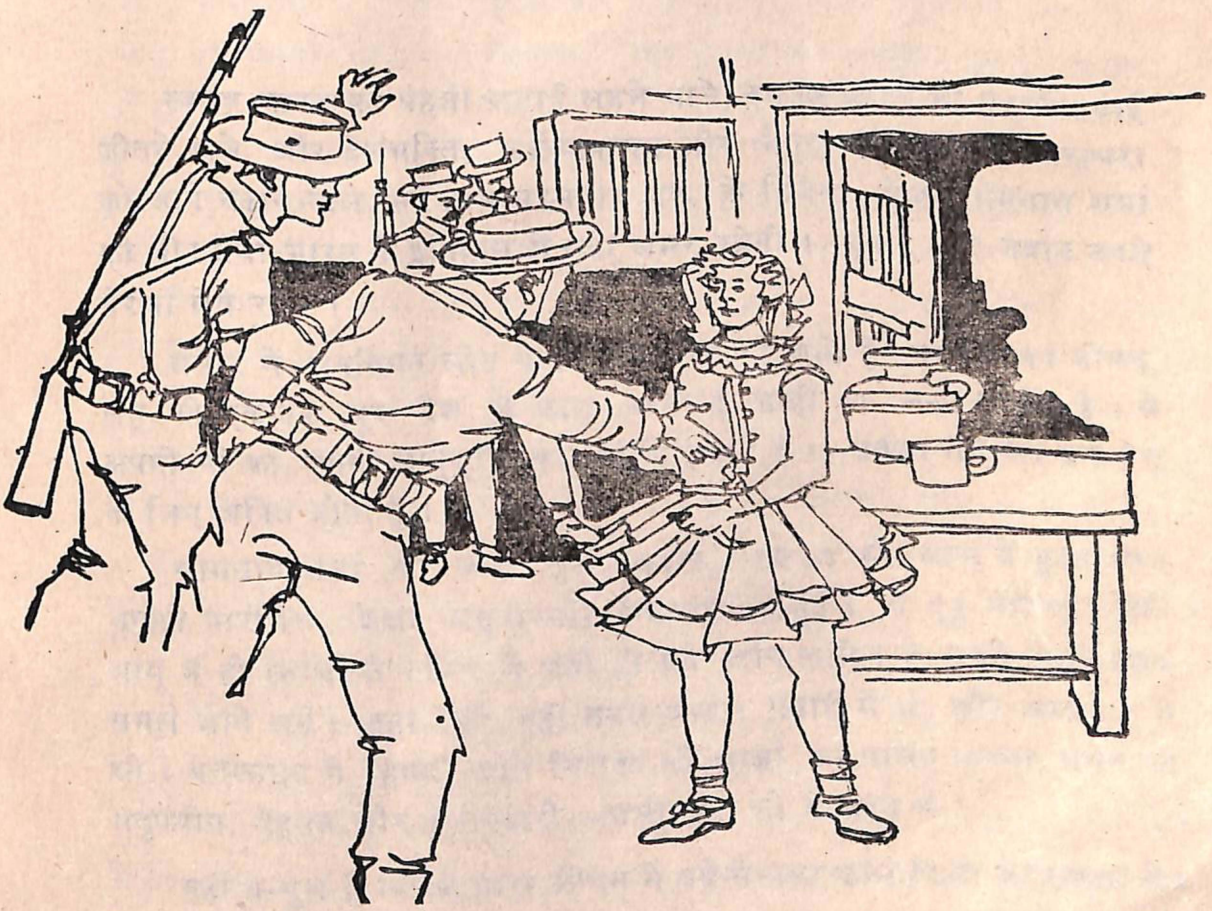

सामने खड़े शत्रु-सैनिक आंखें फाड़कर देखते ही रह गये कि यह कर क्या रहा है ! यह क्या हो रहा है !

क्षण-भर बाद उनकी समझ में आया कि क्या मामला है ! वे इस अकेली लड़की से हार गए थे । निराश हो जाते-जाते वे उसे अधमरी करके छोड़ गये । दूसरे दिन वह मर गयी ।

नहीं-नहीं ! मरी कहां ! वह तो अमर हो गयी । भला देश के लिए प्राण देने वाले भी कहीं मरते हैं !

स्वतंत्र भारत की पहली लड़ाई लड़ने वाले, स्वतंत्र भारत की पहली लड़ाई जीतने वाले और देशभक्ति, कर्त्तव्यपालन और नेतृत्व की भारतीय परम्परा को आगे बढ़ाने वाले, सर्वप्रथम परमवीर चक्र के विजेता मेजर सोमनाथ शर्मा की वीरगाथा भारत के इतिहास में सदा अमर रहेगी। हमारे वीर जवान उनसे प्रेरणा लेते रहेंगे।

संसार में अनगिनत लोग पैदा होते और मर जाते हैं पर जिनका जीवन, लहू की एक-एक बूंद देश के काम आती है, उन्हीं का जन्म सार्थक है। वे अपनी मां का, अपनी मातृभूमि का गौरव बढ़ाते हैं। उनका तन-मन-धन देश के लिए अर्पित होता है।

सोमनाथ शर्मा का जन्म ३० जनवरी, १९३३ को जम्मू में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा मंसूरी और नैनीताल में हुई। वे ११ वर्ष की छोटी आयु में ही मिलिटरी कॉलेज में भर्ती हो गये और कॉलेज के सबसे अच्छे छात्र समझे जाने लगे। जहां देखो, वहीं सबसे आगे। पढ़ाई में भी और खेल-कूद में भी। अनुशासन में रहना, अपने शिक्षकों की आज्ञा का पालन करना, समय का सदुपयोग, मेहनत और ईमानदारी—सभी गुणों की वे खान थे।

यही वे गुण हैं जिनके द्वारा जीवन में बड़े-से-बड़ा काम किया जा सकता है।

एक साधारण लोहा होता है। उसे तपा-गला कर, कूट-पीटकर फौलाद बनाया जाता है। फौलाद को भी पाण देकर अधिक कठोर और मजबूत बना दिया जाता है। मशीनों में बहुत तापमान की जगह, बहुत दबाव की जगह और बहुत रगड़ की जगह ऐसे ही फौलाद से बने पुर्जे काम में लाए जाते हैं। ये पुर्जे बड़े तापमान में भी पिघलते नहीं, बड़े दबाव पर भी टूटते नहीं और रगड़ से घिसते नहीं। मेजर सोमनाथ शर्मा का व्यक्तित्व ऐसा ही पाणदार था।

१५ अगस्त, १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ। अक्तूबर में पाकिस्तान की सहायता से कबाइलियों ने भारत माता के मुकुट काश्मीर पर आक्रमण कर दिया। यह कठिन परीक्षा की घड़ी थी।

कबाइली बढ़ते चले आ रहे थे। देश के दूसरे भागों से काश्मीर में फौज पहुंचने में समय लगता। इसलिए हवाई जहाज से फौज उतारना तय हुआ। पर कबाइली तो हवाई अड्डे की ओर भी बढ़ते आ रहे थे। अगर वे हवाई अड्डे पर अधिकार कर लेते तो भारतीय फौज उतर नहीं सकती थी। दूसरा कोई अड्डा नहीं था। इसलिए काश्मीर को बचाने का एक ही तरीका था, जैसे भी हो, हवाई अड्डे को शत्रु के हाथ में न जाने दिया जाये। यह देशभक्ति की परीक्षा की घड़ी थी। शूरवीरता की कहानी खून से लिखने की घड़ी थी। यह इतिहास बनाने की घड़ी थी। यह इतिहास बदलने की घड़ी थी। यह वह घड़ी थी, जिसके लिए वीर माताएं सपूतों को जन्म देती हैं। यह वह घड़ी थी, जिसकी युद्धवीर प्रतीक्षा करते हैं। यह वह युद्ध की घड़ी थी जो भगवान कृष्ण के गीता-उपदेश के अनुसार भाग्यशाली वीरों को मिलती है। यह शत्रु रक्त से वीर पूर्वजों का तर्पण करने की घड़ी थी।

इस निर्णायक घड़ी में जो सबसे पहली टुकड़ी जहाज से उतरी, उसकी कमांड मेजर सोमनाथ शर्मा के हाथ थी। आंख झपकने की फुर्सत न थी। मेजर शर्मा ने तुरंत सैनिकों को टुकड़ियों में बांटकर श्रीनगर को जाने वाले मार्ग और हवाई अड्डे की सुरक्षा की व्यवस्था की। थोड़े से सैनिकों को साथ लेकर मेजर शर्मा बडगांव नामक ग्राम की ओर बढ़े। इसी ओर से शत्रु बढ़ रहे थे। उन्हें वहीं रोक रखना आवश्यक था। नई कुमुक आने में देर थी और हवाई

अड्डे की सुरक्षा पर ही हार-जीत का फैसला होने वाला था।

भारतीय सैनिक संख्या में बहुत ही कम थे। उधर शत्रु उनसे दस गुना अधिक थे। बडगांव पहुंचकर मेजर शर्मा ने मोर्चाबंदी कर डाली। खंदकें खोद-कर मशीनगनें फिट कर दीं।

अभी मोर्चाबंदी पूरी भी नहीं हुई थी कि शत्रु की टुकड़ी आती दिखाई दी। भारतीय सैनिकों की कम संख्या का आभास पाकर दुश्मनों के हौसले दुगुने हो गये थे। उन्हें क्या पता था कि एक-एक भारतीय सैनिक सवा लाख के बराबर है।

हवाई अड्डे पर थोड़े-थोड़े सैनिक उतर रहे थे। ब्रिगेडियर श्रीनगर में थे और सैन्य-संचालन कर रहे थे।

मेजर शर्मा ब्रिगेडियर महोदय को सारी स्थिति से अवगत रखते हुए, मोर्चे पर इधर से उधर तेजी से आ-जा रहे थे। कम सैनिक, सीमित साधन, गोला-बारूद की कमी, पर वाह रे भारत माता के सपूत! मेजर शर्मा ने सैनिकों को कह दिया था कि एक-एक गोली दुश्मन की छाती को छलनी बनाने के काम आये, बेकार न जाने पाये।

मेजर शर्मा ने कहा, "जब तक दुश्मन बंदूक की मार में न आ जायें, गोली न चलाई जाये।

यह घटना ३ नवम्बर, १९४७ की है। ज्यों ही शत्रु बंदूक की मार में आ पहुंचा, 'फायर' का कड़कता शब्द सुनकर धांय-धांय गोलियां बरस पड़ीं। शत्रु की सेना की लहर, चट्टान की तरह दृढ़ भारतीय जवानों से टकराकर पीछे लौट गयी। मेजर शर्मा प्राणों की बाजी लगाकर, गोलियों की बौछार में एक खंदक से दूसरी, और दूसरी से तीसरी, चौथी में जा-जाकर जवानों का हौसला बढ़ा रहे थे और अंतिम सांस तक डटे रहने का संकल्प दोहरा रहे थे। उधर श्रीनगर में बैठे ब्रिगेडियर चिन्ताकुल थे। इधर तुरंत सहायता की आवश्यकता थी। ये युगांतरकारी घड़ियां थीं।

चुटियाए सांप की तरह शत्रु बार-बार फुंकारता था और विषैले दांत

गड़ाना चाहता था। कबाइलियों की लहर आती, भारतीय सैनिकों की चट्टान से टकराती और बिखर जाती, टूट जाती, लौट जाती।

हमारे सैनिक घायल हो रहे थे। कुछ मर चुके थे और दबाव बढ़ता जा रहा था। भारतीय सैनिक जो पहले ही कम थे, एक-एक कर घटते जा रहे थे। पर यहां प्रश्न किसी सैनिक के जीवन-मरण का नहीं था। यह तो राष्ट्र के जीवन-मृत्यु का प्रश्न था।

मेजर सोमनाथ ने ब्रिगेडियर को चिंतामुक्त करने के लिए जो अंतिम शब्द कहे, वे प्रत्येक देशवासी को अपने हृदय पर अंकित कर लेने चाहिए। उन्होंने कहा था :

हम एक इंच भी पीछे नहीं हटेंगे। आखिरी सैनिक और आखिरी गोली के रहते हम शत्रु को आगे नहीं बढ़ने देंगे। हम अपने प्राण देकर भी देश की आन बचाएंगे।

मेजर शर्मा ने जो कुछ कहा था, वह कर दिखाया। मेजर शर्मा घायल हो गये थे, पर मरहम-पट्टी के बाद फिर मोर्चे पर थे। उन्हें अपने बीच पाकर एक-एक भारतीय सैनिक अजेय दुर्ग बन गया था। मेजर शर्मा अपने संकल्प को दोहरा रहे थे। मर मिटेंगे पर हटेंगे नहीं। और प्रत्येक भारतीय सैनिक का भी यही संकल्प था।

मेजर शर्मा ने जब देखा कि हमारे अनेक जवान वीरगति को प्राप्त हुए हैं और थोड़े से बाकी रह गये हैं तो वे स्वयं गन-चालकों की सहायता करने लगे।

शत्रु की गोलाबारी जारी थी। एक बम उस गोले-बारूद पर जा गिरा जिसे मेजर शर्मा गन-चालकों को दे रहे थे। इस विस्फोट के फलस्वरूप वे चिर-निद्रा में सो गये। परंतु मेजर शर्मा और उनके साथी जवान कृत-कार्य हुए थे, उनका संकल्प पूरा हुआ था। फौजी कुमुक पहुंच गयी थी, श्रीनगर और समूचे काश्मीर को बचा लिया गया था।

मेजर शर्मा सफल मनोरथ और सफल जीवन होकर मरे थे। उनके चेहरे पर संतोष की झलक थी।

पूरे सैनिक सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया।

सूझ-बूझ, कर्त्तव्यनिष्ठा और शौर्य के प्रकाश-स्तंभ मेजर शर्मा आज हमारे बीच नहीं हैं पर मां के इस सपूत का यश सदा अमर रहेगा।

उन्हें मरने के बाद परमवीर-चक्र से सम्मानित करके, परमवीर चक्र का ही सम्मान बढ़ा है।

बालक राजा की वीरता

सन् १८५७ में अंग्रेजों की दासता से भारत माता को मुक्त करने के लिए गदर मचा था।

हैदराबाद के पास ही जेटापुर नाम की एक छोटी-सी रियासत थी। वहां का राजा अभी किशोर ही था। उसने भी अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी। उसने अंग्रेजों से मोर्चा लेने के लिए अरब और रोहिल्ला पठानों की एक फौज खड़ी की थी।

पर देश का दुर्भाग्य यह था कि अनेक रियासतें इस लड़ाई में अंग्रेजों का साथ दे रही थीं। हैदराबाद का निजाम भी अंग्रेजों का पिट्ठू था। वह अंग्रेजों से मिलकर गदर को कुचलने में लगा हुआ था।

सन् १८५८ के फरवरी मास में जेटापुर का राजा हैदराबाद आया हुआ था। निजाम के मंत्री सालारजंग को पता लग गया। उसने अंग्रेजों का कृपा-पात्र बनने के लिए बालक राजा को गिरफ्तार कर लिया और अंग्रेजों को सौंप दिया।

कर्नल मेटोज टेलर नामक एक अंग्रेज अधिकारी की बालक राजा के साथ बड़ी मित्रता थी। बालक राजा इस अंग्रेज अधिकारी को 'अप्पा' कहकर पुकारता था।

मेटोज टेलर जेल में अपने मित्र बालक राजा से मिलने गया। यह अंग्रेज अधिकारी अपना प्रेम जताकर वास्तव में गदर में भाग लेने वालों के नाम जानना चाहता था। पर बालक राजा ने औरों के नाम बताने से साफ मना कर दिया। उसने कहा, "अप्पा, यह मत समझिए कि मैं अपनो जान बचाने के लिए गिड़-गिड़ाऊंगा। मैं दूसरों की दया पर जीना नहीं चाहता। और यह भी आशा मत करना कि मैं अपने साथियों के नाम आपको बताऊंगा। हमने जो कुछ किया है सोच-समझकर किया है। मुझे अपने प्राणों का रत्ती-भर भी मोह नहीं है।"

कुछ दिनों बाद मेटोज टेलर फिर जेल में बालक राजा से मिलने गया। उसने सोचा, बालक राजा संभवतः मौत के डर से कुछ बता दे। उसने राजा से कहा, "अगर गदर में भाग लेने वाले अपने साथियों के नाम बता दो तो तुम्हें छोड़ देने की सिफारिश कर सकता हूं।"

इस पर बालक राजा ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया, "मैं मौत के डर से विश्वासघात नहीं करूंगा। मुझे फांसी हो या तोप से उड़ा दिया जाये, मुझे इसकी तनिक भी चिंता नहीं है। विश्वासघात का कलंक अपने माथे पर नहीं लगाऊंगा।"

कर्नल टेलर ने कहा, "अगर कुछ नहीं बताओगे तो तुम्हें शीघ्र ही मौत का दण्ड दिया जाएगा।"

इस पर बालक राजा ने कर्नल टेलर से कहा, "मेरे लिए एक काम कीजिए। मैं चाहता हूं कि मुझे फांसी पर न लटका कर तोप से उड़ाया जाय।"

कर्नल टेलर की सिफारिश से बालक राजा को प्राणदण्ड न देकर काले पानी की सजा दी गयी।

जब उसे काले पानी ले जाया जा रहा था तो बालक राजा ने हंसी-हंसी में अपने अंग्रेज पहरेदार की बंदूक ले ली और अपने ऊपर गोली दाग ली। गोली दागने से पहले उसने कहा कि मैं कैद और काले पानी की अपेक्षा मौत को ज्यादा अच्छा समझता हूं।

स्वतंत्रता के लिए मौत को लजाने वाले इस बालक राजा को हमारा सौ-सौ प्रणाम।

एक बालचर का साहस

यह सच्ची घटना प्रथम विश्व-युद्ध के समय की है। प्रथम विश्व-युद्ध सन् १९१४ में प्रारंभ हुआ था।

जर्मन सेनाओं ने फ्रांस पर आक्रमण कर दिया था। जर्मन सेना बढ़ती चली आ रही थी। बालक हेनरी अपनी पाठशाला के बालचर दल का मुखिया था। वह अपने साथियों को साथ लेकर फ्रांस के प्रधान सेनापति के पास पहुंचा और प्रार्थना की कि देश पर संकट के इस समय, हमारे योग्य कोई काम बताया जाए।

सेनापति ने सोच-विचार कर देखा कि ये बालक किस काम में उपयोगी हो सकते हैं। उसने मन ही मन निर्णय किया कि इनसे गुप्त समाचार भेजने तथा शत्रु की टोह लगाने का काम लिया जा सकता है।

कुछ दिनों बाद पता चला कि जर्मनी की सेना बढ़ती चली आ रही है।

सेनापति ने बालचर दल के नेता को बुलाकर शत्रु-सेना की गतिविधि पर नजर रखने के लिए कहा।

हेनरी ने आदेश मिलते ही साइकिल उठाई और जिस ओर से शत्रु-सेना बढ़ी चली आ रही थी, उसी ओर चल दिया।

वह बताए गये स्थान से अभी कोई दस मील दूर था कि उसे कुछ

आहट सुनाई दी। उसने साइकिल एक ओर खड़ी कर दी और धरती से कान लगाकर आहट सुनने लगा। उसे पता चल गया कि बहुत-से लोग इसी ओर आ रहे हैं।

उसने साइकिल उठायी और रास्ता छोड़कर एक झाड़ी में जा छिपा। आहट साफ और साफ सुनाई देने लगी। कुछ ही देर बाद उसे सेना आती दिखाई देने लगी।

जब सैनिक उसके पास से आ रहे थे, किसी ने जोर से 'ठहरो' यह आदेश दिया। सैनिक जहां थे, वहीं रुक गये।

शाम का धुंधलका छा गया था। जर्मन सेना ने वहीं पड़ाव डाल दिया। तम्बू गाड़ दिये गये और खाने-पीने की तैयारी होने लगी। खा-पीकर थके-हारे सैनिक सोने की तैयारी करने लगे।

हेनरी जिस झाड़ी में छिपा था, उसके पास ही किसी सैनिक अधिकारी का तंबू था। उसमें बैठे दो अधिकारी धीरे-धीरे कुछ गंभीर बातें कर रहे थे। हेनरी उनकी वर्दी और दूसरे निशानों से समझ गया कि वे कोई बड़े अधिकारी हैं। वह उनकी बातचीत सुनने की अपनी उत्सुकता को नहीं रोक सका। बिना जरा भी आवाज किये, खिसकते-खिसकते वह उनके पास आ पहुंचा। वह जानता था कि यह कितने खतरे का काम है। पर वीर बालचर खतरों से कब डरते हैं! प्राणों की बाजी लगाकर वह चुपचाप सुनता-देखता रहा।

उसने भांप लिया कि ये तो युद्ध की योजना बना रहे हैं। इतने में उनमें से एक तो चला गया और दूसरा कुछ लिखने लगा। हेनरी ने अनुमान लगा लिया कि ये अपनी योजना की सूचना मुख्य कार्यालय को भेजने की तैयारी कर रहे हैं।

उसने सोचा कि यदि यह कागज हाथ आ जाए तो हमारे सेनापति को इनकी योजना का पता लग सकता है। शत्रु की युद्ध-योजना का पता लग जाये तो फिर क्या कहने हैं! पहले से ही बचाव का प्रबंध किया जा सकता है। शत्रु

को भारी हानि पहुंचाई जा सकती है और उसकी योजना नष्ट की जा सकती है।

कुछ देर बाद सैनिक अधिकारी लिखे कागज को वहीं छोड़कर, डाक ले जाने वाले को बुलाने बाहर चला गया। हेनरी के लिए यह बड़ा अच्छा अवसर था। वह फुर्ती से तंबू में घुसा और कागज उठाकर बाहर निकल आया। कागज को अच्छी तरह संभाल कर उसने साइकिल उठायी और चुपचाप भाग खड़ा हुआ। वह साइकिल को तेजी से चलाने लगा।

बालचर हेनरी अपने सेनापति के पास आ पहुंचा। सारी बातें सेनापति को बताईं और वह कागज भी दे दिया। पढ़-सुनकर सेनापति का चेहरा प्रसन्नता से खिल गया।

सेनापति ने हेनरी की ओर देखकर कहा, "आपने यह काम करके मातृ-भूमि की बड़ी सेवा की है। पर अभी भी कुछ काम बाकी है। ये कागज शीघ्र से शीघ्र प्रधान सेनापति के पास पहुंचने चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि इस काम को भी आप सफलता से कर दिखाएंगे। आपने प्रमाणित कर दिया है कि आप साहसी तरुण हैं। आप तुरंत चले जाइए और पत्र को यथास्थान पहुंचा दीजिए। इस बात का ध्यान रखें कि यह शत्रु के हाथ न आये।"

हेनरी ने पूरे आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया, "मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यह पत्र प्रधान सेनापति के अतिरिक्त किसी को नहीं दूंगा। इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए मैं अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करूंगा। बालचर की प्रतिज्ञा कभी झूठी नहीं होगी।"

सेनापति ने पत्र हेनरी को सौंप दिया। उसने पत्र में लिखी बातों को अच्छी तरह याद कर लिया जिससे यदि पत्र को नष्ट भी करना पड़े तो भी पत्र की सारी बातें प्रधान सेनापति को जबानी बता सके।

इसके बाद उसने एक बंदूक, कुछ कारतूस और खाने का सामान लेकर, साइकिल पर अपनी यात्रा आरंभ कर दी।

पत्र को उसने साइकिल के पोले डंडे के भीतर छिपा लिया जिससे तलाशी

लेने पर [illegible]सी को न मिले। वह तीर-सी तेज गति से साइकिल चला रहा था। वह पूरी तरह से चौकन्ना था कि कहीं आस-पास शत्रु तो नहीं हैं। जब उसे कोई बीस मील जाना रह गया तो बड़ी कड़कती आवाज में उसने 'ठहरो' यह आदेश सुना। दूसरी बार की चेतावनी में उसे यह धमकी भी दी गयी कि यदि "रुकोगे नहीं तो गोली मार दी जायेगी।"

हेनरी समझ गया कि अब भाग निकलना कठिन है। वह साइकिल से

उतर कर खड़ा हो गया। तुरंत उसे जर्मन सैनिकों ने पकड़ लिया और साइकिल समेत सेनापति के सामने उपस्थित किया।

सेनापति ने इस तरुण को ध्यान से देखा। फिर प्रश्न किया, "क्या तुम्हारे पास कोई कागज-पत्र है ?

"जी हां।" हेनरी ने निडर होकर उत्तर दिया। वह बालचर था और बालचर कभी झूठ नहीं बोलता।

"अच्छा, वे कागज-पत्र निकाल कहां रखे हैं।" सेनापति ने कहा।

"नहीं श्रीमान्, यह असंभव है। उन्हें मैं नहीं दे सकता।" हेनरी ने स्पष्ट उत्तर दिया।

"देखो, देर मत करो। इस समय तुम हमारे बंदी हो। कागज-पत्र तुमसे छीन लिये जायेंगे। यदि ज्यादा चालाकी दिखाओगे तो गोली मार दी जायेगी।"

"जैसा आप ठीक समझें। गोली मारने की धमकी से आप मुझे मेरे कर्त्तव्य से नहीं डिगा सकते। देशद्रोही बनने से तो मौत ही अच्छी।" हैनरी ने दृढ़ता से कहा।

"बहुत अच्छा ! तुम्हारी अकड़ अभी दूर किये देता हूं। देखता हूं तुम्हारा देश-प्रेम कितनी देर टिकता है। जब तुम्हें तरह-तरह के कष्ट दिए जायेंगे तो होश ठिकाने आ जायेंगे।" सेनापति ने फिर डराया और संतरी को बुलाकर आदेश दिया कि इस छोकरे की तलाशी लो, फिर अच्छी तरह बांधकर इस पर पहरा बिठा दो।

हेनरी ने जल्दी पहुंचने की चिंता में रास्ते में साइकिल पर बंधा खाना भी नहीं खाया था। वह तेजी से साइकिल दौड़ाने के कारण थक भी गया था। पर उसे सबसे ज्यादा दुःख और चिंता इस बात की थी कि प्रधान सेनापति को समय पर सूचना नहीं पहुंच सकेगी। जो काम उसे सौंपा गया था, वह अभी अधूरा था और उसके पूरा होने की आशा भी नहीं थी। वह भूख-प्यास और

थकान भूलकर इसी चिंता में घुला जा रहा था। वह यह भी सोच रहा था कि इस विपत्ति से कैसे छुटकारा मिले।

वह रस्सियों से जकड़ा पड़ा था। पीड़ा से उसका अंग-अंग दुःख रहा था। भूख-प्यास अलग सता रही थी। सूरज छिप चुका था। चारों ओर अंधेरा घिर आया था। बाहर के अंधेरे के साथ-साथ उसके मन में निराशा का अंधेरा भी बढ़ता जा रहा था।

दो सिपाही वहां पहरा देने के लिए खड़े थे। हेनरी ने बालचर के रूप में गांठ बांधना और खोलना सीखा हुआ था। अंधेरे का लाभ उठाकर वह धीरे-धीरे गांठों को खोलने का प्रयत्न करने लगा। अंत में उसने सारी रस्सियां खोल डालीं पर उनको अपने ऊपर इस तरह पड़ा रहने दिया कि जैसे वह बंधा पड़ा है। संयोग से आकाश में बादल छा गए और तेज हवा चलने लगी। अंधेरे और हवा की सांय-सांय आवाज का लाभ उठाकर उसने जरा-जरा सरकना शुरू किया। वह कोई दस फुट दूर रखी साइकिल की ओर सरक रहा था। आधी रात होने को आयी। अब भी साइकिल तीन-चार फुट दूर थी। एक झपट्टे के साथ उसने साइकिल उठाई और भाग खड़ा हुआ।

कुछ आहट पाकर पहरे के सिपाही चौकन्ने हुए तो हेनरी उन्हें दिखाई नहीं दिया। उन्होंने शोर मचाया और कई सैनिक पीछा करने के लिए दनादन गोलियां दागते हुए इधर-उधर भागने लगे। पर अंधेरे और आंधी के कारण हेनरी उनके हाथ नहीं लगा।

इस विपत्ति से छुटकारा मिलने पर हेनरी ने ईश्वर का लाख-लाख धन्यवाद किया। वह तेजी से साइकिल दौड़ाता हुआ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता गया। कोई दो घंटे की दौड़ के बाद उसे फ्रांसीसी भाषा में 'ठहरो, कौन है?' की कड़कती आवाज सुनाई दी। वह समझ गया कि मैं अपने सैनिक पड़ाव में पहुंच गया हूं। वह रुक गया और पहरेदार सिपाही से उसने फ्रांसीसी भाषा में अपना परिचय दिया। एक संतरी उसे प्रधान सेनापति के पास ले गया। हेनरी फ्रांस के प्रधान सेनापति जाफर के सामने खड़ा था।

प्रधान सेनापति ने हेनरी के दिये हुए कागज-पत्र बड़े ध्यान से पढ़े। ज्यों-ज्यों वह पढ़ता गया, उसका चेहरा गंभीर होता गया, उसने कई सेना अधिकारियों को कूच करने और मोर्चाबंदी के आदेश दिये। इसके बाद हेनरी की ओर मुंह करके बोला, "इन महत्त्वपूर्ण कागजों के कारण मुझे अपनी योजना में काफी परिवर्तन करना पड़ा। सेनापति महोदय ने यह भी लिखा है कि इन कागजों को हथियाने का सारा श्रेय आपको है। अब मुझे कागजों को हथियाने की कहानी सुनाइए।"

हेनरी ने आदि से अंत तक की सारी बातें बता दीं। इस पर प्रधान सेनापति जाफर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने हेनरी की प्रशंसा करते हुए कहा, "आप बड़े साहसी और वीर युवक हैं। कर्त्तव्यपालन करने में आप बेजोड़ हैं। सूझ-बूझ भी आपकी कमाल की है। इस छोटी उमर में ही आपने बड़ों से बढ़कर काम कर दिखाया है। मैं चाहता हूं कि आपको कोई सैनिक पद प्रदान करूं। पर आपकी छोटी उमर के कारण संभवतः कोई बड़ा पद नहीं दे पाऊंगा। जो भी होगा देखा जायेगा। जब तक मैं आज्ञा न दूं, यहीं पर रहिए।"

हेनरी को अपनी सच्ची प्रशंसा सुनकर प्रसन्नता तो हुई, पर इस समय वह बहुत भूखा-प्यासा और थका हुआ था। उसे बहुत कमजोरी महसूस हो रही थी। खा-पीकर वह सो गया तो दूसरे ही दिन जागा। स्नान आदि करने के बाद उसने कपड़े पहने तो अधिकारी उसे परेड के मैदान में ले गये। वहां सारी सेना पहले से ही सलामी के लिए तैयार खड़ी थी। उसके वहां पहुंचते ही प्रधान सेनापति ने भाषण देना आरंभ किया। भाषण का सार यही था कि इस तरुण ने प्राणों की बाजी लगाकर, बड़ी सूझ-बूझ के साथ कर्त्तव्य का पालन किया है। यदि यह तरुण ऐसा न करता तो देश की स्वतंत्रता खतरे में पड़ जाती। आज सारा फ्रांस इस तरुण के उपकार के लिए कृतज्ञ है।

इसके बाद प्रधान सेनापति ने उसकी छाती पर 'लीजन ऑफ आनर' नामक पदक लगा दिया। यह पदक हमारे देश के 'परमवीर चक्र' पदक के समान है। प्रत्येक फ्रांसीसी सैनिक या सेनापति इस पदक को पाने के लिए लालायित रहता है।

अपना इतना बड़ा सम्मान होते देखकर पहले तो उसने नम्रतापूर्वक धन्यवाद दिया। फिर बोला, "मैंने केवल अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। और कर्त्तव्य का पालन करना प्रत्येक बालचर का धर्म है। जब मैं बालचर बना था, तो मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं ईश्वर और देश की सेवा में कभी पीछे नहीं रहूंगा। बस, मैंने उस प्रतिज्ञा का पालन-भर किया।"

दर्जी से जल-सेनापति

कोई तीन सौ वर्ष पुरानी बात है । एक अंग्रेज बालक वाइट द्वीप के वान चर्च नामक नगर में दर्जी की दुकान पर काम करता था । एक दिन उसका मालिक किसी काम से कहीं चला गया तो बालक हाथ का सुई-धागा छोड़कर सामने दूर तक लहराते सागर को निहारने लगा ।

बालक के माता-पिता बचपन में ही मर गये थे । अनाथालय में उसका पालन-पोषण हुआ था और अब अनाथालय वालों ने उसे दर्जी के पास काम सीखने बिठा दिया था । पर बालक का मन इस काम में नहीं लगता था । उसका जी करता कि जहाज पर बैठकर यहां-वहां घूमता रहे ।

वह देर तक सागर की ओर देखता रहा । उसे दूर से आते जहाजों के मस्तूल दिखायी देने लगे । फिर जहाजों के ऊपरी हिस्से और बाद में समुद्र की छाती को चीरते हुए बड़े-बड़े जहाज दिखायी दिये । अब बालक से दुकान पर बैठा नहीं गया । वह सागर तट की ओर दौड़ पड़ा । वहां एक छोटी-सी नाव खड़ी थी । यह बालक उस पर चढ़ गया । नौका लंगर डाले जहाज के पास जा पहुंची । यह जंगी जहाजों का बेड़ा था । फ्रांस तथा इंगलैंड के बीच लड़ाई छिड़ी हुई थी । लोग जंगी जहाजों पर नौकरी करने के लिए तैयार नहीं होते थे । यह बालक जल-सेनापति के सामने जा उपस्थित हुआ । वह भर्ती होने के लिए बार-

बार आग्रह करने लगा। पहले तो उसकी छोटी उमर को देखकर जल-सेनापति ने मना कर दिया, पर बाद में स्वीकृति दे दी।

इंग्लैंड के ये जहाज दूसरे ही दिन फ्रांस के जंगी जहाजों से लड़ाई में उलझ गये। सामना होते ही तोपें गोले बरसाने लगीं। चारों ओर धमाकों का शोर मच गया। धुएं के बादल उठने लगे और गोलियों की दनादन होने लगी।

यह बालक अभी कल ही जहाज पर आया था। लड़ाई का तो वह नाम-भर जानता था। पर कितने आश्चर्य की बात है कि वह जरा भी नहीं घबराया। अपने अधिकारी की आज्ञानुसार फुर्ती से अपना काम करता रहा। जब पुराने-पुराने सैनिकों के पित्ते पानी हो रहे थे, वह मस्ती से अपना काम कर रहा था।

लड़ाई चलती रही। तोपें गोले बरसाती रहीं। गोलियां दनादन चलती रहीं। धमाकों से कानों के पर्दे फटे जाते थे। बारूद की गन्ध और धुएं से नाक और आंखें बेकार हुई जाती थीं। पर हार-जीत का कोई फैसला नहीं हो रहा

था । इस बालक की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि लड़ाई का फैसला कब और कैसे होगा ! उसने एक जहाजी से पूछ ही लिया, "हम लोगों को कैसे पता चलेगा कि शत्रु हार गये ?"

उस पुराने जहाजी ने शत्रु जहाज के मस्तूल पर फहराते फ्रांसीसी झंडे को उंगली से दिखाते हुए कहा, "जब सामने का वह झंडा नीचे उतार लिया जायेगा, हम समझ जायेंगे कि शत्रु हार गये ।"

"बस, इतनी-सी बात से ही हार-जीत का फैसला हो जायेगा ?" बालक ने आश्चर्य से पूछा ।

"हां ।" जहाजी ने निश्चयात्मक स्वर में उत्तर दिया ।

यह उत्तर सुनते ही बालक वहां से ओझल हो गया ।

उन दिनों जहाज एक-दूसरे से सटकर लड़ते थे । दूसरे पक्ष के जहाज के चारों ओर चक्कर काटते हुए जहाजों पर से गोले-गोलियां बरसाई जाती थीं । सैनिक शत्रु के जहाज पर चढ़कर बलपूर्वक अधिकार करने का प्रयत्न करते थे । फ्रांस के जल-सेनापति का जहाज इस समय बालक वाले जहाज के पास ही था । दोनों में घमासान लड़ाई जारी थी ।

यह बालक अपने जहाज से कूद कर शत्रु-पक्ष के जहाज पर जा चढ़ा । फिर जहाज से झूलती रस्सियों की सीढ़ी से वह मस्तूल पर जा चढ़ा । दोनों ओर से अंधाधुंध गोलियां चल रही थीं । पर बालक था कि इसे गोलियों की जरा भी परवाह नहीं थी ।

संभवत: अपने-अपने काम में लगे जहाजियों में से किसी की भी नजर इस बालक पर नहीं पड़ी । यही कारण था कि वह मस्तूल पर चढ़कर शत्रु-पक्ष के झंडे को उतारने में सफल हो गया । यही नहीं, वह उस झंडे को लेकर अपने जहाज पर वापस भी आ गया । वह नन्हा बालक दोनों सेनाओं की गोलियों और नजरों से बचा रहा ।

फ्रांसीसी जहाजों ने देखा, हमारे जहाज पर झंडा नहीं है । उन्होंने समझा, हमारे सेनापति ने हार मान ली । उनके हौसले पस्त हो गये । तोपचियों ने गोले

दागने बन्द कर दिये । उन्होंने एक तरह से लड़ाई बन्द कर दी ।

अंग्रेज सैनिकों ने जब देखा कि शत्रु-पक्ष का झंडा गायब है तो उनके हौसले दूने हो गये । उन्होंने समझा, शत्रु ने हार मान ली । जीत की उमंग और लूट के विचार से वे फ्रांसीसी जहाजों पर कूद पड़े । फ्रांसीसी भौचक्के रह गये कि यह एकाएक क्या हो गया ! पर वे बाजी हार चुके थे । अंग्रेजों ने उन जहाजों पर अधिकार कर लिया ।

बालक की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । वह हाथ में फ्रांसीसी झंडा लिए अपने लोगों को बताने लगा कि यह झंडा मैं उतारकर लाया हूं ।

जब इस बात की सूचना अंग्रेज जल-सेनापति को मिली कि कल भर्ती किये गये बालक ने यह आश्चर्यजनक काम किया है तो उसने इस बालक को अपने पास बुलाया और सारी घटना सुनाने को कहा ।

घटना सुनने के बाद उसने बालक को पीठ थपथपाई और उसे पुरस्कार दिया । उसी दिन उसकी पद-वृद्धि भी कर दी ।

अब तो यह बालक ज्यों-ज्यों उमर में बड़ा होता गया, लगातार उन्नति करता गया । एक दिन ऐसा भी आया कि वह 'जल-सेनापति' के सबसे ऊंचे पद पर जा पहुंचा । उसका नाम 'हाप्सन' था ।

अंग्रेज इतिहास में 'जल-सेनापति हाप्सन' का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है ।

□□

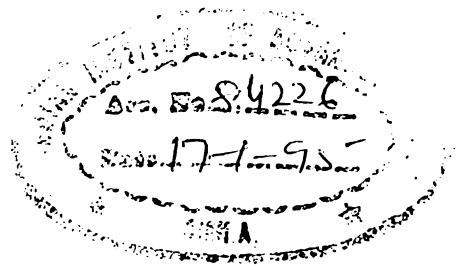

19|12|

I. I. A. S. LIBRARY

Acc. No.

This book was issued from the library on the date last stamped. It is due back within one month of its date of issue, if not recalled earlier.

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STU
LIBRARY

ACC. NO. ३५४२६

AUTHOR. सत्यराज २८२-५

TITLE. देश प्रेम की कहानियाँ

BORROWER'S NAME	SIGNATURE
श्री किला शर्मा	19/12/96

Library IIAS, Shimla
H 028.5 V 459 D
00084226

पाठ्य पुस्तक अधिकारी, शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ
के पत्र सं० बी/14114—14305/अठारह/85-86 दिनांक 15-3-86
द्वारा जूनियर बेसिक स्कूलों हेतु स्वीकृत ।